उदीयमान साक्षरता के संदर्भ में पठन-लेखन संबंध की विश्लेषणात्मक दृष्टि

उषा शर्मा*

भाषा-अर्जन और भाषा-अधिगम की प्रक्रिया भाषा के परिवेश से प्रभावित होती है। भाषायी कौशल भी एक-दूसरे को निरंतर प्रभावित करते हैं। एक अच्छा वक्ता होने के लिए एक अच्छा श्रोता होना अनिवार्य शर्त है, क्योंकि वह ध्यानपूर्वक कही गई बातों, विचारों को सुनकर समझता है और साथ-साथ भाषा भी अर्जित करता है। सुनना जितना अधिक बेहतर होता है, बोलना उतना ही अधिक समृद्ध होता है। यही संबंध पढ़ना और लिखना में देखा जा सकता है। जब हम पढ़ते हैं तो विचार, विषय के साथ-साथ भाषा भी अर्जित करते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर—2022 भी इस ओर संकेत करती है कि प्रिंट और पढ़ने-लिखने के पर्याप्त अवसरों के साथ बच्चे बहुत कम उम्र से पढ़ना, लिखना और सीखना शुरू कर सकते हैं। पढ़ना और लिखना दोनों भाषा के लिखित रूप से जुड़े हैं। शुरुआती लेखन कौशल में कुछ व्यक्त करने के लिए बच्चे ड्रॉइंग या स्क्रिबलिंग करते हैं और जब उनसे पूछा जाता है कि यह क्या बनाया है तो वे उसके बारे में बात भी करते हैं। धीरे-धीरे बच्चे ध्वनि और आकृति के संबंध को समझने लगते हैं और पारंपरिक वर्तनी एवं लेखन की ओर आगे बढ़ने लगते हैं। बच्चे घर और बाहर प्रिंट के संपर्क के माध्यम से शुरुआती पढ़ने और लिखने के कौशल हासिल करते हैं। पढ़ने और लिखने के संबंध को एक प्रक्रियापरक परिप्रेक्ष्य में देखना अधिक समीचीन है। भाषा के ग्राफोफोनिक (ध्वनि-आकृति), संरचनात्मक, अर्थ संबंधी और प्रयोग के स्तरों पर पढ़ने और लिखने में समानताएँ हैं और दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत लेख पढ़ने-लिखने के परस्पर संबंधों कि पड़ताल करता है और कक्षीय प्रक्रिया के आयाम को उद्घाटित करता है।

भाषा किसी भी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। भाषा जीवन का भी महत्वपूर्ण अंग है और यह हमारी समझ, ज्ञान और ग्रहण का माध्यम बनती है। प्राय: भाषा को इस रूप में परिभाषित किया जाता है—'भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम/साधन है'। परंतु भाषा की यह परिभाषा उसकी प्रकृति, स्वभाव के स्थान पर उसके प्रकार्य को व्यक्त करती है। जीवन में अनेक ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जब हमारे हृदय के भाव कुछ और होते हैं और भाषा यानी वाणी कुछ और अभिव्यक्त करती है।

*आचार्य एवं प्रभारी, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 110 016

ऐसा करते हुए हम नि:संदेह भाषा के सहारे स्थितियों को साधने के कार्य करते हैं, पुनश्च, भाषा का कार्य है— स्थितियों को संभालना! भाषा की भाषावैज्ञानिक परिभाषा है — 'भाषा स्वयं में एक अर्थपूर्ण व्यवस्था है'। अब इस अर्थपूर्ण व्यवस्था में भाषा की ध्वनियाँ भी हैं, शब्द भी, वाक्य भी और प्रोक्ति अर्थात संवाद भी! इस अर्थपूर्ण व्यवस्था के माध्यम से हम अनेक प्रकार के कार्य करते हैं — केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सुनकर समझना, ज्ञान प्राप्त करना, अनुमान लगाना, तर्क करना, अपनी बात कहना आदि। इस रूप में किसी भी भाषा-समुदाय में प्रयुक्त भाषा की अवधारणात्मक समझ उसे विशिष्ट बनाती है और भाषा एवं बोली का विभेद समाप्त करती है। यह सर्वविदित है कि भाषा का मौखिक रूप प्राथमिक है और यह मौखिक भाषा पढ़ने-लिखने के कौशल में साधन का कार्य करती है। मौखिक भाषा में पारंगत व्यक्ति धीरे-धीरे भाषा विशेष में पढ़ना-लिखना सीखने की ओर प्रवृत्त होता है। परंतु यह भी सत्य है कि भाषा के चारों कौशल रेखीय रूप में नहीं सीखे जाते कि हम एक कौशल के बाद दूसरा और दूसरे कौशल के बाद तीसरा कौशल अर्जित करते हैं अथवा सीखते हैं। इस संदर्भ में यह अवधारणात्मक समझ और अधिक सहायता करती है कि सभी भाषायी कौशल एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, सुनना जितना अधिक बेहतर होता है, बोलना उतना ही अधिक समृद्ध होता है। जब हम सुनते हैं तो अनेक प्रकार का ज्ञान अर्जित करते हैं — विषय, विचार, भाषा और यह भी कि किस संदर्भ में किस तरह से अपनी बात प्रस्तुत की जाती है। अनेक बार यह ज्ञानार्जन ऐच्छिक होता है, क्योंकि जब किसी के साथ संवाद करते हैं तो हमारा पूरा ध्यान संवाद की विषयवस्तु पर होता है — क्या कहा जा रहा है, क्यों कहा जा रहा है, जो कहा जा रहा है — वह सही है अथवा गलत, क्या कोई बात अधूरी अथवा गलत रूप से संदर्भित तो नहीं है! अनेक बार ऐसा होता है कि संवाद में ज्ञानार्जन अनैच्छिक भी होता है, क्योंकि श्रोता के रूप में हमारा ध्यान कम ही इस ओर जाता है कि शब्द कौन-से थे, वाक्य-संरचना कैसी थी, बोलने में अनुतान कैसे था आदि। लेकिन भाषा का यह पक्ष स्वाभाविक रूप से हमारी स्वयं की भाषा का हिस्सा बन जाता है और जिस तरह से यह सब संपादित होता है, वह सायास नहीं अपितु अनायास होता है। सुनकर जो भी अर्जित किया जाता है, वह जब हमारी भाषा का हिस्सा बन जाता है तो हम संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार उसी अर्जित भाषायी संपदा का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार भाषा के सभी कौशल एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

इसी तरह से जब हम किसी भी प्रकार की पठन सामग्री को पढ़ते हैं तो पूरा ध्यान अर्थ पर होता है, लेकिन भाषा के विभिन्न आयाम सहज भाव के साथ हमारी भाषा का हिस्सा बनते जाते हैं।

उदीयमान/नवोन्मेषी साक्षरता

साक्षरता का संबंध भाषा से है और उसमें भी वह विशेष रूप से पढ़ने-लिखने की मूलभूत अवधारणाओं को स्पष्ट करती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर — 2022 के अंतर्गत 'उदीयमान/नवोन्मेषी साक्षरता' को कौशल, ज्ञान और अभिवृत्ति के रूप में व्याख्यायित किया गया

है — "उद्गामी साक्षरता को उन कौशलों, ज्ञान और अभिवृत्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है जिन्हें बच्चे पारंपरिक या धाराप्रवाह पाठक और लेखक बनने से पहले पढ़ने और लिखने को लेकर विकसित करते हैं। प्रिंट और पढ़ने-लिखने के पर्याप्त अवसरों के साथ बच्चे बहुत कम उम्र से पढ़ना और लिखना सीखना शुरू कर सकते हैं। इससे पहले भी, जब वे पारंपरिक रूप से (अक्षरों और शब्दों का उपयोग करके) डिकोड करने और लिखने में सक्षम होते हैं। उद्गामी साक्षरता चरण छोटे बच्चों के लिए पढ़ना और लिखना सीखने की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। उद्गामी साक्षरता में शुरुआती पढ़ना और लिखना दोनों शामिल हैं"। (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर 2022, पृष्ठ 115) यह अवधारणात्मक समझ बच्चों की पढ़ना-लिखना सीखने की सहज क्षमता में भी विश्वास व्यक्त करती है। इसका यह अर्थ भी है कि यदि बच्चों को बचपन से ही एक समृद्ध भाषा-परिवेश उपलब्ध कराया जाए जहाँ भाषा का प्रयोग करने और पढ़ने-लिखने के सार्थक अवसर हों, वहाँ बच्चे स्वभावत: 'पढ़ना-लिखना अर्जित करने' की प्रक्रिया में सम्मिलित हो जाते हैं। बच्चों का शुरुआती पढ़ना-लिखना और उससे जुड़ी प्रक्रियाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

यदि इतिहास पर दृष्टि डालें तो या ज्ञात होता है कि 1980 के दशक तक पढ़ना सीखने की शुरुआत में ध्वनि विज्ञान पर बल रहा और यह एक मुख्य दृष्टिकोण के रूप में कक्षीय प्रक्रियाओं को प्रभावित करने लगा। इस दृष्टिकोण ने पढ़ना सीखने के संबंध में 'पठन तत्परता' या 'पढ़ना सीखने की तैयारी' को अधिक महत्व दिया। 'पठन तत्परता' साक्षरता संबंधी अनुदेशन यानी पढ़ना सीखना शुरू करने के लिए पढ़ने की तैयारी पर बल देती है। इसका अर्थ यह है कि पहले आप पढ़ने की तैयारी करें और उसके बाद पढ़ना सीखें! यह कैसे संभव हो सकता है? आइए, इसे मौखिक भाषा अर्जन के सिद्धांत से समझते हैं। हम अपने भाषा विकास अथवा छोटे बच्चों के भाषा विकास की पड़ताल करें तो पाएँगे कि मौखिक भाषा का परिवेश मिला और बच्चे भाषा का प्रयोग करते-करते भाषा अर्जित करते चले गए। हाँ, यह ठीक है कि जितना और जैसा अनुभव रहा, भाषा वैसा-वैसा आकार लेती चली गई। सब कुछ एकदम से नहीं हुआ, बल्कि मौखिक भाषा विकास में अनेक पड़ाव या चरण रहे, लेकिन सुनने और बोलने की तैयारी कभी नहीं रही। ऐसा नहीं हुआ कि पहले हम सुनने की तैयारी करें और फिर सुनना सीखें, पहले हम बोलने की तैयारी करें और फिर बोलना सीखें। हम सुनते-बोलते सुनना और बोलना अर्जित करते चले गए। इसका अर्थ यह है कि भाषा-परिवेश और भाषा-व्यवहार ही भाषायी कुशलताओं को पैना करता है। अब इसी नियम को हम पढ़ने-लिखने पर लागू करते हैं। यही भाषा-परिवेश और भाषा-व्यवहार हमें पढ़ने-लिखने के संदर्भ में भी मिले तो हम पढ़ना-लिखना भी अर्जित कर सकते हैं, उसके लिए किसी तैयारी की आवश्यकता नहीं है। बाद में 'पठन तत्परता' या 'पढ़ना सीखने की तैयारी' के इस विचार को चुनौती दी गई और शोधकर्ताओं एवं शिक्षकों ने उदीयमान साक्षरता (स्ट्रिकलैंड और मोरो, 1989; टील और सल्जबी, 1986) की अवधारणा को पुष्ट किया। यह स्वयं में प्रारंभिक लिखित भाषा

विकास के बारे में एक तरह की वैचारिक क्रांति थी। उदीयमान साक्षरता का दृष्टिकोण यह स्वीकार करता है कि बच्चे विद्यालाय आने से पूर्व भाषा, पढ़ने और लिखने का कुछ-न-कुछ ज्ञान अवश्य अर्जित कर लेते हैं। साक्षरता यानी पढ़ने-लिखने का विकास बच्चों के जीवन में जल्दी शुरू हो जाता है और निरंतर जारी रहता है। उदीयमान साक्षरता के प्रारंभिक दौर में अधिकांश शोध इस विचार का ठोस समर्थन करते हैं कि "परिवेश से प्राप्त उद्दीपन के परिणामस्वरूप बच्चे के भीतर से लेखन और पठन में वृद्धि होती है। जो वृद्धि देखी गई है वह औपचारिक शिक्षण की आवश्यकता के बिना होती है" (टील और सल्जबी, 1986)। यहाँ 'परिवेश से प्राप्त उद्दीपन' का अर्थ किसी प्रकार का यांत्रिक अभ्यास नहीं अपितु सार्थक, स्वाभाविक भाषा या पढ़ने-लिखने का परिवेश है।

पढ़ना-लिखना सहज और सार्थक हो सके। इसमें पाठ्यवस्तु की भी विशेष भूमिका होती है। इस संबंध में शोभा सिन्हा 2021 का यह मानना है कि उदीयमान साक्षरता पढ़ने और विकास की एक सर्वथा भिन्न और व्यापक अवधारणा पर आधारित है। "साक्षरता अब केवल 'डिकोडिंग' के रूप में ही नहीं, बल्कि पढ़ने की पूरी क्रिया के रूप में देखी जाती है, जिसमें समझना भी शामिल है (मसन और सिन्हा,1993)। नवोन्मेषी साक्षरता का नजरिया ऐसे अर्थपूर्ण पाठों से संवाद करने की वकालत करता है। पढ़ना-लिखना सीखना, जिसमें असल उद्देश्यों के साथ-साथ आनंद भी मिले, यह नजरिया भाषा के केवल ध्वनि पक्ष पर ध्यान नहीं देता, बल्कि भाषा के सभी पक्षों (अर्थ संबंधी, वाक्य-विन्यास संबंधी और आकृति-ध्वनि संबंधी) पर बल देता है।" (सिन्हा, 2021, पृष्ठ 69)। इस उद्धरण में तीन मुख्य बिंदु हैं—

1. अर्थपूर्ण पाठ और उनमें शामिल होना;
2. पढ़ना-लिखना सीखने का वास्तविक उद्देश्य;
3. केवल ध्वनि के स्थान पर भाषा के सभी पक्षों पर बल।

पढ़ना सीखने के संदर्भ में अर्थपूर्ण पाठ या पाठ्यवस्तु का चयन ऐसा हो जिसमें बच्चे स्वयं के लिए अर्थ का निर्माण कर सकें, उसे 'पढ़ने' से उन्हें किसी अर्थ की प्राप्ति हो, जो पढ़ने का आनंद दे और बच्चा स्वयं के जीवन से उसे जोड़ पाए। इस बिंदु को केंद्र में रखा जाए तो सबसे पहले हमें यह पूर्वाग्रह या विचार त्याग देना होगा कि बहुत छोटे बच्चे जो अभी पढ़ना-लिखना नहीं जानते, उन्हें पुस्तक देने से कोई लाभ नहीं होगा। यह संकीर्ण विचार 'परिवेश से प्राप्त उद्दीपन' की समस्त संभावनाओं को समाप्त कर देता है। उदीयमान साक्षरता का दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि बच्चों को प्रिंट समृद्ध परिवेश देना चाहिए जिसमें कहानी-कविता की किताबें, पोस्टर, काड्र्स आदि सम्मिलित हैं। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी बुनियादी स्तर के बच्चों के लिए बाल साहित्य उपलब्ध कराने पर बल देती है—"सभी भारतीय और स्थानीय भाषाओं में दिलचस्प और प्रेरणादायक बाल साहित्य और सभी स्तर के विद्यार्थियों के लिए स्कूल और स्थानीय पुस्तकालयों में बड़ी मात्रा में पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएँगी" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ 13) बाल साहित्य का चयन पूरी सावधानी के साथ किए जाने की आवश्यकता है। बाल साहित्य बच्चों की

आयु, रुचि एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का प्रतिनिधित्व करने वाला होना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर 2022, भी गुणवत्तापूर्ण बाल साहित्य का समर्थन करती है और यह स्पष्ट रूप से कहती है कि बाल साहित्य बच्चे की भाषा और साक्षरता के विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वस्तुत: शुरुआती पठन कौशल में प्रिंट की जागरूकता भी सम्मिलित है और शुरुआत में बच्चे शब्दों को भी चित्र के रूप में 'पढ़ते' हैं तथा अर्थ का निर्माण करते हैं। प्रिंट या छपी हुई पाठ्यवस्तु का एक अर्थ होता है — यह भी बच्चे सीखते हैं। प्रिंट की यह जागरूकता तब और अधिक विकसित होती है जब बच्चे निरंतर प्रिंट को देखते, सराहते और समझते हैं। अत: पढ़ना-लिखना सीखने के लिए 'किताब' कमाल करती है। तीन वर्ष के बच्चों सहित सभी बच्चों के लिए उपयुक्त विभिन्न प्रकार की किताबें — बड़े चित्र वाली किताबें (बिग बुक), रंग-बिरंगे ग्रेड वाले रीडर, दिलचस्प कहानियों वाली किताबें और कविताएँ आदि उपलब्ध करना आवश्यक है। "ये सभी किताबें पढ़ने को बच्चों के लिए एक रोमांचक और आकर्षक अनुभव बना देंगे।" (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर 2022, पृष्ठ 163) इसके साथ-साथ यदि पाठ्यचर्या लक्ष्य 10 की दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफल को देखते हैं जो प्रथम भाषा में पढ़ने-लिखने के विकास से संबद्ध हैं तो यह कहा जा सकता है कि बुनियादी स्तर पर पढ़ना-लिखना सीखने से जुड़ी अनेक महत्वपूर्ण प्रक्रियाएँ कक्षा-कक्ष का हिस्सा होनी चाहिए, जैसे—

C-10.2– किताब का बुनियादी ढाँचा/प्रारूप, छपे हुए शब्द और उनकी छपाई की दिशा के आइडिया को समझती है, और मूलभूत विराम-चिह्नों को पहचानती है।

C-10.9– विविध प्रकार की बच्चों की किताबें चुनने और पढ़ने में रुचि दिखाती है (L1)।

C-10.5– के सीखने के प्रतिफल—

1. 'चित्र पुस्तकें पढ़ती है और वस्तुओं तथा क्रियाओं की पहचान करती है।'
2 'चित्र पुस्तकें पढ़ती है और पात्रों और कथानक की पहचान करती है और कहानी को छोटे-छोटे क्रमों में बताती है।

(स्रोत — राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर 2022, पृष्ठ 62 और 67)

'किताब का बुनियादी ढाँचा' और 'चित्र पुस्तकें' इसलिए महत्वपूर्ण है कि किताब के पन्ने पलटते-पलटते बच्चे अनेक प्रकार की बारीकियों को समझ लेते हैं और यही बारीकियाँ उनके लेखन में व्यक्त होती हैं, क्योंकि पढ़ना-लिखना भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। साथ ही एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

पढ़ना और लिखना

पढ़ना और लिखना दोनों भाषा के लिखित रूप से जुड़े हैं। हम जो कहना चाहते हैं उसे बोलकर भी कह सकते हैं और लिखकर भी। अपनी बात कहने और किसी अन्य की बात सुनकर समझने में भाषा का मौखिक रूप प्रयोग में आता है। परंतु जब हम किसी के लिखे हुए को पढ़कर समझते हैं तो हम भाषा के लिखित रूप से जुड़े होते हैं। इस तरह से पढ़ना और लिखना भाषा के लिखित रूप से जुड़े हुए हैं। लेकिन पढ़ना अपने आप में

बहुत विस्तृत अवधारणा है, जिसमें भाषा के लिखित संकेत ही शामिल नहीं होते, बल्कि किसी चित्र को पढ़ना, किसी विज्ञापन को पढ़ना भी 'पढ़ने' की श्रेणी में आता है। 'शुरुआती लेखन कौशल में कुछ व्यक्त करने के लिए ड्रॉइंग और अस्पष्ट घसीटकर लिखना या गोंजा-गोंजी/गोदा-गोदी शामिल है। बच्चे अपने आप को लेखन में अभिव्यक्त करते हैं और इसके बाद जो उन्होंने लिखा है उसके बारे में बात करते हैं। छोटे बच्चों का लेखन उनकी बात, अनुभव, ड्रॉइंग, पढ़ने और नाटक-खेल से संबंधित होता है। बाद के चरणों में, बच्चे धीरे-धीरे ध्वनि और प्रतीकों के बीच के संबंध को समझने और पारंपरिक वर्तनी और लेखन की ओर बढ़ने से पहले अक्षर जैसी आकृतियों का उपयोग करते हैं और अपनी वर्तनी (जैसे kat for cat, बिंदु के लिए बनद) बना लेते हैं। बच्चे घर और बाहर प्रिंट के संपर्क के माध्यम से शुरुआती पढ़ने और लिखने के कौशल हासिल करते हैं (जैसे— लेबल को पहचानना, उन्हें पढ़कर सुनाई जाने वाली कहानी की किताबें देखना, लोगों को लिखते या चित्र बनाते हुए देखना)... मुद्रित शब्द बोली जाने वाली भाषा के शब्दों के प्रतीक होते हैं। ये बोली जाने वाली ध्वनियाँ मौखिक और लिखित भाषा के बीच अंतर्संबंध को देखने में मदद करती हैं।' (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022, पृष्ठ 116) इस उद्धरण में निम्नलिखित बिंदु महत्वपूर्ण हैं—

- कुछ व्यक्त करने के लिए ड्रॉइंग और अस्पष्ट घसीटकर लिखना;
- जो लिखा है उसके बारे में बात करना;
- छोटे बच्चों का लेखन उनकी बात, अनुभव, ड्रॉइंग, पढ़ने और नाटक-खेल से संबंधित होता है;
- पारंपरिक वर्तनी और लेखन की ओर बढ़ने से पहले अक्षर जैसी आकृतियों का उपयोग करना;
- घर और बाहर प्रिंट के संपर्क के माध्यम से शुरुआती पढ़ने और लिखने के कौशल हासिल करना;
- लेबल को पहचानना, पढ़कर सुनाई जाने वाली कहानी की किताबें देखना, लोगों को लिखते या चित्र बनाते हुए देखना;
- मुद्रित शब्द बोली जाने वाली भाषा के शब्दों के प्रतीक होते हैं।

इन सभी बिंदुओं में एक विचार समान है—प्रिंट या 'लिखित' का होना और परिवेश में मौजूद प्रिंट की समझ बनाना। 'अक्षर जैसी आकृतियों को बनाना' पठन और लेखन के मध्य संबंध/जुड़ाव को व्यक्त करता है। बच्चे जैसे अक्षर देखते हैं, पढ़ते हैं—लिखते समय वे वैसे ही अक्षर बनाने का प्रयास करते हैं। बच्चों का लेखन उनके द्वारा बनाए गए चित्रों में बखूबी अभिव्यक्त होता है और उनके लिए एक बिंदु 'बिल्ली' भी हो सकती है और 'गुब्बारा' भी; एक बिंदु 'कंकड़' भी हो सकता है और 'ब्रह्मांड' भी। तो बच्चों के लेखन में बिंदु से ब्रह्मांड तक की यात्रा की जा सकती है बशर्ते हम बच्चों को अपने लेखन के बारे में बताने के अवसर दें। वे एक ही बिंदु के इर्द-गिर्द पूरी कहानी रचने में पारंगत हैं।

पढ़ने और लिखने के बीच समानताएँ

पढ़ना और लिखना दोनों ही भाषा के लिखित रूप से संबंधित हैं। पढ़ने-लिखने में जो समानताएँ हैं वे

भाषा के ग्राफोफोनिक (अक्षर-ध्वनि), संरचनात्मक (वाक्यात्मक), अर्थ और प्रयोग के स्तरों पर मौजूद हैं। न केवल पढ़ने और लिखने के बीच, बल्कि पढ़ने और लिखने, बोलने और सुनने के बीच भी भाषा की सभी अभिव्यक्तियों के बीच समानताएँ देखी जा सकती हैं। कैरोलिन बर्क (हर्स्टे, वुडवर्ड, और बर्क, 1984) ने इन समानताओं को 'भाषावैज्ञानिक डेटा पूल' के रूप में संदर्भित किया है, जिसका अर्थ है कि भाषा की किसी भी अभिव्यक्ति से जुड़े अनुभव भाषा की किसी अन्य अभिव्यक्ति में संलग्न होने पर उपयोग किए जाने वाले संसाधन बन जाते हैं। आप बोलने से क्या सीखते हैं—चीजों को क्या कहें, किसी विषय के बारे में कैसे बात करें, भाषा कैसे काम करती है आदि। जब आप भाषा की किसी अन्य अभिव्यक्ति में शामिल होते हैं तो यही 'सीखा हुआ' एक संसाधन बन जाता है, फिर चाहे वह पढ़ना-लिखना हो या सुनना और बोलना हो। वस्तुत: बर्क का मॉडल पढ़ने और लिखने के बीच एक समन्वय का सुझाव प्रस्तुत करता है। यह मॉडल केवल इतना ही नहीं है कि पढ़ना और लिखना सह-संबद्ध हैं, बल्कि यह भी कि इस सह-संबद्धता में वे भाषा सीखने वालों को अपनी वृद्धि और विकास के मामले में अधिक तेजी से आगे बढ़ जाने की अनुमति भी देता है। लेबर्ग और सैमुअल्स (1974; पृष्ठ 294) ने यह भी जानकारी दी कि 1960 के दशक में शिक्षकों को यह निर्देश दिया गया कि वे छोटे बच्चों को एक साथ पढ़ना और लिखना न सिखाएँ। इसके मूल में यह धारणा थी कि कि दोनों विषयों (पढ़ना-लिखना) को एक साथ सिखाने से छोटे बच्चे के लिए बहुत कठिन हो जाता है और बहुत सारी जानकारी एकत्रित हो जाती है। शिक्षकों को यह सलाह दी गई कि जब तक बच्चे पढ़ना न सीख जाएँ तब तक लिखना सिखाना शुरू न किया जाए। दरअसल, इस सलाह का अर्थ यह था कि पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में बच्चे शब्दों को बोलने के आधारभूत सिद्धांत सीखें और स्वाभाविकता अथवा सहजता के साथ 'स्वचालितता के साथ' शब्दों को पहचानने के लिए पर्याप्त शब्दावली सीखें। 'स्वचालितता' से लेबर्ग और सैमुअल्स का मतलब था कि शब्दों को इतनी सहजता या बिना किसी कठिनाई के स्वरित (ध्वनि देना) करना या बोलना जिससे अर्थ पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। अन्य शब्दों में कहें तो पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में बच्चे शब्दों को देखकर बोलने के इतने अभ्यस्त हो जाएँ कि वे अपनी समस्त ऊर्जा बोलेने के स्थान पर अर्थ ग्रहण करने पर लगाएँ। वे पढ़ने की प्रक्रिया को एक साथ दो काम करने के रूप में देखते थे। भाषा और सीखने में नई अंतर्दृष्टि (गुडमैन, 1996) ने ऐसी सलाह पर प्रश्न-चिह्न लगाए और यह विचार व्यक्त किया कि कि भाषा की प्रणालियों को अलग करने से पढ़ने और लिखने—दोनों को सीखने में मुश्किल होती है। परंतु यह प्रक्रिया सरल हो जाती है जब हम पढ़ने और लिखने को एक-दूसरे के सह-संयोजन में सिखाते हैं।

पढ़ने और लिखने के मध्य अनेक प्रकार की समानताएँ होती हैं। उदाहरण के लिए, ग्राफोफोनिक। ग्राफोफोनिक का अर्थ है—भाषा की जो आवाज़ें या ध्वनियाँ (शब्द भी) जैसे बोली जाती हैं उनके साथ उसका लिखित रूप जोड़ना। उदाहरण के लिए, जब हम 'कार' शब्द बोलते हैं तो भाषा की ध्वनियों या

मौखिक आवाज का उपयोग करते हैं, लेकिन जब हम किसी कहानी की किताब या कार्ड पर ‘कार’ शब्द लिखा हुआ देखते हैं तो ‘का’ (लिखित रूप) को ‘का’ (मौखिक रूप) कहते हैं और ‘र’ (लिखित रूप) को ‘र’ (मौखिक रूप) के रूप में उच्चारित करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि लिखित रूप को ध्वनि विशेष से संबोधित करना या जोड़ना।

प्री-स्कूल के बच्चे भी स्कूल जाने से पहले पढ़ने और लिखने के बारे में अनेक प्रकार की अवधारणाओं से परिचित होते हैं। इस संबंध में हर्स्टे अंग्रेजी भाषी बच्चों पर किए गए एक शोध (हर्स्टे, वुडवर्ड, और बर्क, 1984) के निष्कर्ष को साझा करते हुए बताते हैं कि छह वर्ष की आयु तक सभी अंग्रेजी बोलने वाले बच्चे कुछ ग्राफीम-फोनीम ज्ञान (ध्वनि—आकृति ज्ञान) के साथ स्कूल आते हैं। यह शहर के अंदरूनी इलाकों और उन क्षेत्रों के बच्चों के लिए भी सत्य पाया गया जहाँ बहुत अधिक लिखित परिवेश नहीं था। यहाँ लिखित परिवेश का अर्थ है—बच्चे अपने परिवार या समुदाय, बाजार या पड़ोस आदि में कुछ-कुछ लिखा हुआ देखते हैं, जैसे—दुकानों के नाम, सड़क पर लिखे होर्डिंग्स, अखबार, मकान का नाम या नंबर आदि। शोध के आँकड़े यह बताते हैं कि तीन वर्ष से कम आयु के बच्चे परिवेश में मौजूद प्रिंट की कुछ वस्तुओं को पढ़ सकते हैं, जैसे—स्टॉप साइन पर ‘स्टॉप’, मैकडॉनल्ड्स कप पर ‘मैकडॉनल्ड्स’ और क्रोजर के दूध के डिब्बे पर ‘मिल्क’ शब्द आदि। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि मैकडॉनल्ड्स कप दिखाने पर एक भी बच्चे ने ‘वेंडी’ या ‘बर्गर किंग’ नहीं कहा। उन्हें दिखाए गए लिखित रूप के आधार पर उनकी प्रतिक्रियाएँ कहीं अधिक अनुमानित थी। ऐसे अनेक उदाहरण भारतीय भाषाओं में भी देखे जा सकते हैं जब बच्चे बाजार जाते हैं तो दुकान या सड़क पर अपनी पसंद की चीज के लिखित रूप को देखते हैं और उसका नाम पुकारते हैं यानी अपने अनुभव या अनुमान के आधार पर वे ऐसा करने में सक्षम होते हैं, जैसे—किसी बिस्कुट का नाम बोलना ‘पारले जी’ या किसी चिप्स का नाम बोलना—‘अंकल चिप्स’ आदि।

ऐसे अनेक उदाहरण और भी मिलते हैं कि जब बच्चों से पारंपरिक लेखन की अपेक्षा की जाती है तो वे कुछ अक्षरों को लिखते चले जाते हैं—कभी अलग-अलग तो कभी जोड़-जोड़कर!

चित्र 1

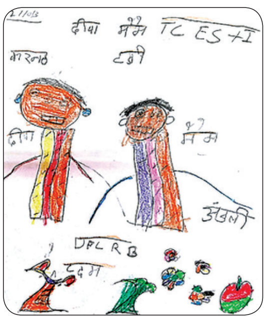

चित्र 2

चित्र 3

स्रोत– उषा शर्मा, कक्षा 1 का लेखन

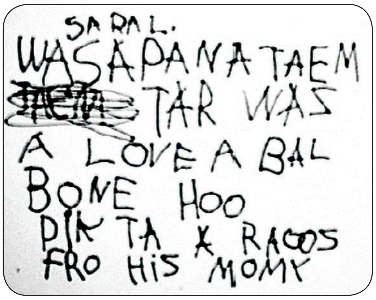

चित्र 4

स्रोत– जीरोम सी. हर्स्टे

पहले 3 चित्र कक्षा के बच्चों द्वारा अपनी दीपा मैडम को लिखी चिट्ठी के नमूने हैं। दीपा मैडम कक्षा एक को पढ़ाती थी और कुछ समय बाद उनकी पदोन्नति हुई तो वे दूसरे स्कूल में चली गई। बच्चों ने उन्हें याद करते हुए उनके बारे में 'जी भरकर' बातें कीं और फिर उन्हें चिट्ठी लिखी और अपने मन के भाव व्यक्त करने का प्रयास किया। बच्चों ने दीपा मैडम कि तस्वीर भी बनाईं और कुछ-कुछ लिखने का प्रयास भी किया। 'दीपा मैम' शब्द यानी उनकी मैडम का नाम बोर्ड पर लिखा गया था, वह भी बच्चों के यह कहने पर कि उन्हें दीपा मैडम का नाम लिखना नहीं आता तो चिट्ठी कैसे लिखें। इसलिए तीनों नमूनों में 'दीपा मैम' पारंपरिक रूप से लिखा गया है।

पहले और दूसरे चित्र में कुछ शब्द समान हैं, लेकिन उनकी बनावट अलग है यानि वे कुछ अलग तरीके से लिखे गए हैं, जैसे— 'करनठ', 'टजी', 'अंजली/अजंली' और कुछ शब्द अलग हैं, जैसे— 'अचछ'/'प्दम'/'DPLRB'/'TCES+I'। यह लेखन इस ओर संकेत करता है कि इन दोनों बच्चों ने साथ बैठकर चिट्ठी लिखी है। लेकिन दोनों द्वारा लिखा गया 'अंजलि' शब्द अलग है। दूसरे चित्र में बच्चे ने अंग्रेजी के भी कुछ अक्षर लिखे हैं और संभवत: उन्हें ऐसा लगा कि चिट्ठी लिखना एक तरह का 'टेस्ट' है तो उस बच्चे ने अंग्रेजी में 'test' शब्द लिखने का प्रयास किया है, हालाँकि उसमें 'C' अतिरिक्त जुड़ गया है। हिंदी और अंग्रेजी के दोनों शब्दों पर गौर करें तो ज्ञात होता है कि बच्चे पारंपरिक लेखन की इस बात से तो परिचित हैं कि जो कुछ उन्होंने दीपा मैडम के बारे में कहा था (मौखिक भाषा) उसे लिखा भी जा सका है जिसके लिए उन्होंने कुछ अक्षर बनाए और जोड़ दिए। तीसरे चित्र में अक्षरों को जोड़ने से कुछ आगे बढ़कर बच्चे ने वाक्य लिखने का प्रयास किया है। हालाँकि, शब्द कुछ अस्पष्ट हैं या लेखनी (हैंड राइटिंग) पठनीय नहीं है, लेकिन इतना तो ज्ञात हो रहा है कि यह लिखने का प्रयास किया गया है कि— 'हम आपको याद कर रहे हैं।'/'दीपा मैम अच्छी लगती हैं।'/'आप प्यारी हैं।'/'आप कहाँ हो।' ये तीनों बच्चे यह लेखन के बारे में यह जानते हैं—

- कुछ अक्षरों को जोड़ने से कोई शब्द बनता है।
- कुछ शब्द लिखते जाने से कोई वाक्य या बात बनती है।
- हिंदी भाषा में शब्दों के ऊपर एक रेखा (शिरोरेखा) खींची जाती है
- हम जैसा बोलते हैं, उसे वैसा लिखा भी जा सकता है।
- कही गई बात को लिखा भी जा सकता है।

अब हमारे सामने 'अंजलि' (बच्चों के नाम) शब्द है जो किसी बच्चे का नाम है। बच्चे जब कभी अपनी नोटबुक या किताब पर अपना नाम लिखा हुआ देखते हैं तो वे भले ही हिंदी भाषा

के अक्षरों, शब्दों से भली-भाँति परिचित न हों, लेकिन वे अपने नाम (लिखित रूप) से परिचित होते हैं। फिर चाहे 'अंजलि' का अनुस्वार यानी बिंदी 'अ' पर लगी हो या 'ज' पर। इतना ही नहीं, 'क'/'र'/'न'/'ठ'/'जी'/'आप' आदि वर्णों/अक्षरों की बनावट पारंपरिक लेखन के बहुत समीप है। बच्चे इन अक्षरों और 'ई' की मात्रा से भी परिचित हैं जो उन्होंने 'टजी' लिखने में इस्तेमाल किया है। जब किसी किताब या अन्य तरीके से प्रिंट या लिखित आँखों के सामने से बार-बार गुजरता है तो बच्चे लिखने के बारे में अनेक अवधारणाएँ बना लेते हैं जिसमें से सबसे मजबूत अवधारणा है— बाएँ से दाएँ लिखना। यह बात चित्र 4 के लेखन पर भी लागू होती है।

चित्र 4 का लेखन पाँच वर्षीय सारह नाम की बच्ची द्वारा अपनी माँ के लिए बनाया गया जन्मदिन का कार्ड है। जब सारह से कार्ड को पढ़ने के लिए कहा गया तो उसने पढ़ा— "Once upon a time there was a loveable bunny who picked a rose for his mommy." यह गौर करने वाली बात है कि सारह ने 'Once upon a time' को एक ही इकाई के रूप में लिखा है जबकि उसमें चार शब्द हैं। शेष अन्य शब्द एकल इकाई के रूप में लिखे गए हैं, भले ही वे पारंपरिक लेखन के रूप में न हों। सारह ने 'loveable' को तोड़ कर लिखा है—LOVE-A-BAL जो यह दर्शाता है कि बच्चे को एक लंबा शब्द लिखने में कठिनाई हो रही है और उसने उसी क्रम से ध्वनियों को तोड़-तोड़ कर यानी हिज्जे करते हुए लिखा है। उसके द्वारा लिखे गए शब्द—PIK (PICK)/FRO (FOR)/HOO (WHO)/TAR (THERE)/BONE(Bunny) यह बताते हैं कि बच्चे बोली जा रही ध्वनियों को उसके लिखित रूप से मिलान करने की कोशिश अवश्य करते हैं। जिसका सबसे मजबूत उदाहरण है— HOO (WHO)। सारह अपने 'S' को 'Z' की तरह बनाती है, क्योंकि 'was' शब्द में अंतिम ध्वनि 'स' नहीं बल्कि 'ज़' जैसी है। सभी बच्चों के लेखन के नमूने यह बताते हैं कि बच्चों का अक्षर-ध्वनि संबंध बेहतर है और अभी केवल पाँच-छह वर्ष के ही हैं। क्रम से उच्चरित ध्वनियों को उनके प्रतीक चिह्नों के साथ मिलान करते हुए उसी क्रम से लिखना एक और मजबूत पक्ष सामने आता है, जैसे आप/pik आदि। हाँ, अक्षरों की बनावट के तौर पर भी बच्चों का थोड़ा-सा संघर्ष देखा जा सकता है।

पढ़ने और लिखने के मध्य संरचनात्मक समानता भी होती है। इसका यह अर्थ है कि जब हम किसी बात को किसी या किन्हीं वाक्यों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं तो लिखते समय उसी प्रकार की वाक्य संरचना का प्रयोग करते हैं। एक उदाहरण से इसे समझते हैं।

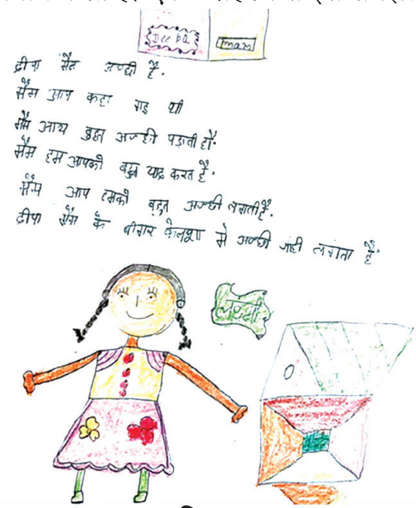

चित्र 5

स्रोत– उषा शर्मा, कक्षा 1 का लेखन

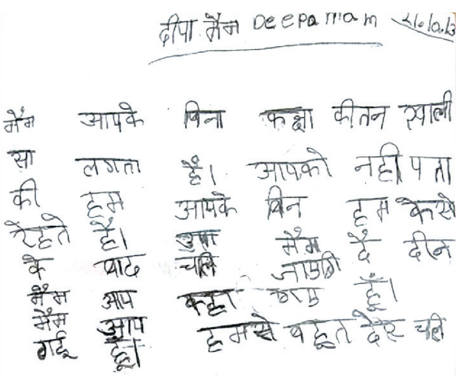
दीपा मैम Deepa mam 21/10/13
मैम आपके बिना कक्षा कीतन खाली
सा लगता है। आपको नही पता
की हम आपके बिन हम कैसे
रेहते है।

चित्र 6

स्रोत– उषा शर्मा, कक्षा 1 का लेखन

चित्र 5 कक्षा एक की बच्ची लक्ष्मी का लेखन है। पारंपरिक लेखन की तरह और वर्तनी की एक-दो त्रुटियों के अतिरिक्त वह जो कहती हैं, जिन शब्दों और वाक्यों में कहती है— उसे वैसा लिखने की कुशलता में दक्ष है। कुछ शब्द देखे जा सकते हैं जो बोलने के तरीके और लिखने के तरीके और फिर पढ़ने के तरीके के बीच के संबंध को उजागर करते हैं, जैसे— 'पड़ाती' (पढ़ाती) शब्द लिखना। अधिकांशत: 'पढ़ाती' शब्द को पड़ाती' के रूप में ही बोला, सुना और पढ़ा जाता है। इसलिए लक्ष्मी ने भी ऐसा ही लिखा। लक्ष्मी के द्वारा लिखे गए शब्द 'अच्छी'/ 'आप'/ 'लगता है'/ 'हमको' आदि शब्द पारंपरिक लेखन के सुंदर उदाहरण हैं। जब लक्ष्मी से अपनी लिखी हुई चिट्ठी को पढ़ने के लिए कहा गया तो उसने अंतिम पंक्ति को पढ़ा— "दीपा मैम के बगैर क्लास में अच्छा नहीं लगता"।

जब हम पढ़ने और लिखने में संबंधों की बात करते हैं तो उनमें अर्थ स्तर पर भी समानता पाई जाती है। चित्र 6 भी कक्षा एक की बच्ची के लेखन का उदाहरण है जो जटिल वाक्य संरचना का प्रयोग दर्शाती है। बच्ची जब दीपा मैडम के प्रति अगाध प्रेम और उस प्रेम के कारणवश उनकी अनुपस्थिति से उसकी उदासी या दुख को अभिव्यक्त करती है तो लिखती है—

वाक्य 1— मैम आपके बिना कक्षा **कीतन खाली सा लगता है।** (मैम आपके बिना कक्षा कितनी खाली-सी लगती है।)

वाक्य 2— आपको नही पता की **हम आपके बिन हम केसे रेहते है।** (आपको नहीं पता कि हम आपके बिना कैसे रहते हैं।)

वाक्य 3— मैम आप हमसे **बहूत देर चलि गई हू।** (मैम आप हमसे बहुत दूर चली गई हैं।)

वाक्य 3 सरल वाक्य होते हुए भी बेहद भावपूर्ण है। **'बहूत देर चलि गई हू।'** (बहुत दूर चली गई हैं।) पद अर्थ की गहनता को व्यक्त करता है। वाक्य 1 भी सरल वाक्य है लेकिन **'कीतन खाली सा लगता है।** (कितनी खाली-सी लगती है।) पद किसी को बहुत अधिक याद करने या उसकी अनुपस्थिति को और घनीभूत होकर उदास या दुखी होने को व्यक्त करता है। वाक्य 2 मिश्र वाक्य का उदाहरण है और **'हम आपके बिन हम केसे रेहते है।** (हम आपके बिना कैसे रहते हैं।) पद में हृदय द्रवित हो जाता है। इसका अर्थ यह है कि जब बच्चे पढ़ते हैं तो अक्षर कि बनावट से लेकर शब्दों का चयन, वाक्य की संरचना और अर्थ की गहनता के साथ लिखित अभिव्यक्ति को प्रखर बनाते हैं। इतना ही नहीं, बच्चे विराम-चिह्नों (हिंदी भाषा के विशेष संदर्भ में) का प्रयोग भी सीखते हैं।

पढ़ना सीखने में मौखिक भाषा के वाक्य-विन्यास और लिखित भाषा के वाक्य-विन्यास के बीच संबंध को पुन: स्थापित करना एक कारगर उपाय है। बच्चों को यह विश्वास दिलाना आवश्यक है कि जो कह सकते हैं, उसे लिखा जा सकता है और बाल साहित्य की उपलब्धता को सुनिश्चित करना इसी सिद्धांत का समर्थन करता है। जो बच्चे निरंतर बाल साहित्य या प्रिंट से अपनी 'दोस्ती' बनाए रखते हैं, वे बहुत कुछ अर्जित करते हैं, जैसे— भाषा, भाव, विचार और भाषा के यांत्रिक पक्ष भी। जब भी हम कहानियाँ पढ़ते हैं तो अक्सर वे इस तरीके से शुरू होती हैं—

- एक दिन की बात है...
- बहुत समय पहले की बात है...
- एक बार एक आदमी...

जब बच्चों से कहा गया कि वे किसी कहानी को लिखें या कविता को आगे बढ़ाएँ तो उनके प्रत्युत्तर कुछ इस तरह के थे—

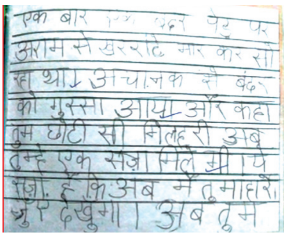

चित्र 7

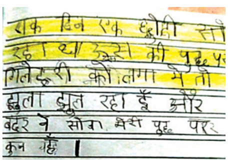

चित्र 8

स्रोत– उषा शर्मा, कक्षा 2 का लेखन

चित्र 7 और 8 बच्चों द्वारा लिखी गई कहानी के नमूने हैं। कहानी अक्सर जिस तरह से शुरू होते हुए पढ़ते या सुनते हैं, अपनी कहानी लिखते समय भी वैसी ही शुरुआत करते हैं। 'एक बार एक बंदर पेड़ पर आराम से खर्राटे मार कर सो रहा था। अचानक से ...।'/ 'एक दिन एक छोटी सो रही थी।' दोनों कहानियाँ पारंपरिक रूप से शुरू होने वाली कहानियों की तरह शुरू होती हैं जो पढ़ने-लिखने के संबंधों को और अधिक ठोस रूप प्रदान करती है।

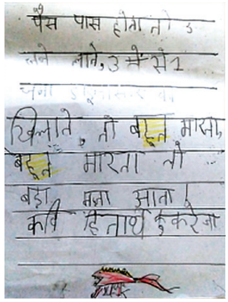

निरंकार देव सेवक की कविता— 'पैसा पास होता तो चार चने लाते' कविता कक्षा में पढ़ी गई, गाई गई और बच्चों ने उस कविता को अपने-अपने अनुसार आगे बढ़ाया। बाल साहित्य के आवरण पृष्ठ से प्रारंभ करते हुए बच्चे कहानी या कविता पढ़ते है तो कहानी का शीर्षक, लेखक या कवि का नाम, चित्रांकनकर्ता नाम भी पढ़ते हैं, उसका ज्ञान अर्जित करते हैं और फिर अपना नाम भी लेखक के रूप में लिखते हैं, जैसे— कवि – हितार्थ कुकरेजा। ये सभी उदाहरण इस ओर संकेत करते हैं कि लिखना सीखने में पढ़ना सहायता करता है और पढ़ना सीखने में मौखिक भाषा, क्योंकि हम केवल भाषा ही नहीं अर्जित करते बल्कि विचार और उसकी संदर्भ के अनुसार अभिव्यक्ति भी अर्जित करते हैं।

हम जानते हैं कि कहानी/कविता की भाषा समाचार की भाषा से अलग होती है और समाचार की भाषा रोजमर्रा के उपयोग वाली भाषा से अलग होती है। हर विषय या शैली में एक अलग 'रजिस्टर' या नियमों का सेट होता है जिसके आधार पर भाषा का व्यवहार होता है। सभी भाषाएँ परिस्थिति या संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न आकार लेती हैं। कक्षा एक के बच्चे जब दीपा मैडम के लिए चिट्ठी लिखते हैं तो

यह सिद्धांत समझ आता है कि प्रामाणिक उद्देश्यों के लिए लिखना अपने शिक्षक के लिए लिखने से बहुत अलग है।

बच्चों के साथ काम करते हुए अक्सर यह देखने को मिलता है कि लिखित भाषा सीखने में आयु या अवस्था की तुलना में अनुभव एक बड़ा कारक है। बच्चों को विभिन्न प्रकार की भाषाओं का जितना अधिक अनुभव होता है, उतनी ही आसानी से वे पढ़ने और लिखने— दोनों में सफल एवं सक्षम होते हैं। 'आपको नही पता की **हम आपके बिन हम केसे रेहते है।**' (आपको नहीं पता कि हम आपके बिना कैसे रहते हैं।) – यह लेखन शैली अनुभव का।

निष्कर्ष

पढ़ने और लिखने के संबंध को एक प्रक्रियापरक परिप्रेक्ष्य में देखना अधिक समीचीन है। भाषा के ग्राफोफोनिक (ध्वनि-आकृति), संरचनात्मक, अर्थ संबंधी और प्रयोग के स्तरों पर पढ़ना और लिखना में समानताएँ हैं और दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यदि पढ़ने और लिखने को 'मस्तिष्क की प्रक्रियाओं' के संदर्भ में देखते हैं तो इनके मध्य का संबंध अधिक स्पष्ट एवं ठोस रूप लेता है। पाठक और लेखक दोनों ही अपने अनुभव की पृष्ठभूमि से अर्थ का निर्माण करते हैं, पढ़ने में अनुमान लगाना और कुछ विचारों को लिखित रूप में कागज पर उतारना तब और अधिक सरल हो जाता है।

वस्तुत: अर्थ या शब्दार्थ ही वह प्रेरक शक्ति है जो एक कुशल पाठक या एक प्रभावी लेखक बनने में सहायता करती है। एक अच्छा लेखक बनने के लिए निरंतर पढ़ना और दोबारा पढ़ना आवश्यक है। एक पाठक के लिए कोई भी रचना एक सतत प्रक्रिया के रूप में होती है, पन्ने से आँखों के हटने के काफी समय बाद भी वह रचना आँखों के सामने रहती है। जब लिखने का समय आता है तो वही रचना पुनः लेखन का मार्ग प्रशस्त करती है।

संदर्भ

क्ले, एम. 2001. *चेंज ओवर टाइम इन चिल्ड्रेन 'स लिटेरसी डेव्लपमेंट*. पोर्ट्समाउथ, एनएच : हीनमैन.

गुडमैन, के.एस. 1968. *द साइको लिंगुइस्टिक नेचर ऑफ द रीडिंग प्रोसैस*. डेट्रोइट, एमआई : वायने स्टेट, यूनिवर्सिटी प्रेस.

ग्रेव्स, डी. और के.जी. शॉर्ट. (विद बर्क, सी.) 1988. क्रियेटिंग क्लासरूम्स फॉर ऑथर्स. पोर्ट्समाउथ, एनएच : हाइनमन

———. 1993. *राइटिंग : टीचर्स एंड चिल्ड्रेन एट वर्क*. पोर्ट्समाउथ, एनएच : हाइनमन.

टील, डब्ल्यू. और ई. सल्ज़बी. 1986. इमर्जेंट लिटरेसी ऐज अ पर्सपेक्टिव फॉर एग्जामिनिंग हाउ यंग चिल्ड्रन बिकम राइटर्स एंड रीडर्स (इन डब्ल्यू टील और ई. सल्ज्बी). *इमर्जेंट लिट्रेसी— राइटिंग और रीडिंग*. पृ.सं. 7–25. नार्वुड एनजे, एबलेक्स.

मसन, जे.एम. और एस. सिन्हा. 1993. इमर्जिंग लिटरेसी इन द अर्ली चाइल्डहुड ईयर्स : एप्लाइंग वायगात्कियन मॉडल ऑफ लर्निंग और डेवलपमेंट (इन बी) स्पोडेक (संपा.). हैंडबुक ऑफ रिसर्च ऑन द एजुकेशन ऑफ यंग चिल्ड्रेन पृ.सं. 137–150. मैकमिलन, न्यूयॉर्क.

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

सिन्हा, शोभा. 2021. *स्कूलों में साक्षर बनना सीखना – पढ़ना है समझना*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

हर्स्टे, जीरोम सी. 1988. *रीडिंग-राइटिंग कनेक्शन*. https://jeromeharste.com/wp-content/uploads/2013/08/09-0084Reading-Writing-11.pdf

——— और सी.एल. बर्क. 1996. *थेओरिटिकल बेस्ड स्टडीज ऑफ पैटर्न्स ऑफ मिसक्यूज इन ओरल रीडिंग परफॉर्मेंस*. डिपार्टमेंट ऑफ हैल्थ, एजुकेशन एंड वेलफेयर. वाशिंगटन, डीसी : यू.एस.